

[illegible]

श्रवमा

१ अथ विवाहविधिर्निश्चयः ॥ न कर्म र्थाः ॥ २ विनायस्क पृथक् ॥ यो द कया य ॥ क्रि
धं जामस पूजा या द व द्या य माल ॥ ॥ ई स ल कृ द्नी या द क या ल ॥ आ वा न ल
इ स न क र्म यो च क ॥ क म ला ३ ग ण गु न ना ग रि ग म व लि रा ॥ ल्वि का मा ल्व कृ र्म ॥
म ग रु नु उ वा वा सि जाम उ जा स गु ण ग म व न्द का वा य ॥ ध म वा या डी य ड मा
न र्थ ॥ ॐ अ श्रु दि ॥ य ड मा न स क न्या सु व लु क् म न वि वा दा द ग ग ण गु न ना ग
म रु ण वा क्य बो र्थ ॥ वि धि र्थ क म्य ला ष्ट ज या य ॥ ध य दी प ज प रु ण र्थ धू न क

३ अथ विवाहविधिर्निश्चयः ॥ द्वा र्थ व न्द ना दि अ न्न स क ल्प ग र्थ धू न क ॥ अ न्न ग न्ध दि ॥
ग र्म म स मा वा र्थ का उ र्थि ना स ला डा रु या न स र्थि क स र्थ न ॥ नि र्म कृ न व लि
थि दा पि ज्ञा दि न स न र्थ न क ॥ म रु ल र्थ ग म रु ल वि स र्थ न ॥ ॥ म ग रु ना उ वा स गु ण
न द्वा य ॥ ग म रु द्द का न द्वा य ॥ ग म रु द्द का वा य ॥ ॐ ॥ ॐ स र्थि वा क्य (०) ॥ ग दि
म म्मा चाला हा ग स र्थ न स र्थि क र्थो या व डी न क र्म ॥ वा च न ना य ॥ द व र्थ न ॥ अ दि द दि
॥ वा च न का य ॥ अ र्थ मा ग ल र्थ न अ रि द द ॥ व र्म र्थि क न ग गु ल ॥ गी वा द वि य ॥

सर्व ज्ञान गियति ॥ मास ध्याया वक्र धून कावला साल यज्ञ को मानी स सम
रुचिय नथिय काव ॥ गत देव का क्वि चक्र ॥ इस नै जाने के ॥ कलं क काय माने ॥
अत इ स न या विधि ॥ अथ म रिया व मा अथ कल गय कय कगी ली लकी ग
यु गल वलि ईखा पि खा दिवा य ॥ यिना य अनिनी रु निनी काय ॥ लं सा या नड
काय ॥ ॥ जाया य न वक्रा य जा या य ॥ लिमिवा सुदवा य ॥ वागमा स द्द का ल
व कन क च लान ॥ अथ लिमि स कया व ॥ वक्रार्थ को दि सैन निमि चुन ॥ अथ
॥ अथ वक्रा ॥ सगुल लिमि चान दाय ॥ सु दाय ॥ चन्दन सिन्दूर मगुली ॥

सर्व अनिनिन दाय ॥ सर्व ज्ञान गियति ॥ सकल रिन खान ॥ अथ
गलान ध पदी प लो ग ॥ निग वग ॥ अथ गन्ध ॥ ॥ जाया य स्ये य
न ॥ यक य कगी ना ग य य व र थ य स ग य क ॥ कल ग थ व र दि ग ग
थ व का दि पृ व्वा दि डरु नान ॥ अथ डु डन ॥ अथ य थ न वि वि ॥ ॥ चरु म स्मार्थ का दि
म ला सा लरु ॥ यरु म ल प या य क लि स ख लि क स सा न ॥ निमि चुन वलि ॥ वक्रा दि सान
वक्र ॥ क्राप य र्क धून क ॥ सग र्ग ग ठ व सगु ल थ डि ग लिमि न दाय ॥ चन्दन म ल
शन दाय ॥ सा कय ॥ वकन र्ग ॥ लला ठ द दि डरु गानी पादी ॥ कर्त थ र्ग ॥ ड का ल ॥

कालत ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ एहि मस्मा च न न सिद्ध न सुख ली वी द विव ॥ स र्द्ध ज्ञान तिष्ठ
निष्ठा ॥ मास धर्त या व कवि ॥ ला माला व र्ध द व स्रु किक स सान न्नी वा य के ॥ न ड पुजा
या धि उ व रु म लु न श क न ग द कि ली क्रा य ॥ लु सि पा व के ॥ मा उ नू य के ॥ ॥ थ का छि र्थ
ला माला र्ध या व स्रु किक म र्ध नो र्ध शो य के ॥ नि म क न व लि ॥ वे क्रा दि सान न न के ॥
मं लु ल स र्ध ग ग म्मा दि ॥ म त र्द्ध ठा उ यो न द्रा य स र्ध व न सि द्ध ने ग म्मा माले र्ध थ ग द क
स र्ध द्रा य ॥ सि द्ध न प म्मा वि द्या व स र्ध के ॥ व रु न ति य के ॥ सि द्ध मू र्ध न द्रा ठा ड सि द्ध माले न
आ ग न द्रा या व सि द्ध क्रा य ॥ ॐ सि द्ध नाना द न म्मा मू र्ध रु म्मा ॥ ॐ लं ज वि ष द ॥ सि द्ध मू र्ध क्रा य ॥

य स र्ध पि णि नि स र्ध व स क म ल द्रा याल रु नि नि न ग व र्ध का का प ठ न लि थ ग म्मा द्रा
य ॥ रु नि नि क्रा य ॥ ॐ शो ग म्मा मि ल ॥ ग त व र्ध का न का खा य के ॥ ॐ स र्ध मालि ॥ ॐ नि नि न
द्रा य ॥ ॐ न म १ र्ध वा य व ॥ य स र्ध पि णि नि न द्रा य ॥ ॐ पु जा प त न ॥ द्रा माले ग म्मा य के ॥ ॐ ग व
का य ॥ ॐ र्ध पा र ल र्ध व न द्रा य ॥ ॐ र्ध व स र्ध ॥ लू व न न ग व के ॥ का प ठ न लि स ॥ ॐ दि व र्ध
र के ॥ व र्ध न सि द्ध ने स र्ध ली वी द वि व ॥ वी द व न क व के ॥ द्रा क ल द्रा ड द कि ली वी
द वि व ॥ ए हि म स्मा ध का छि र्थ द्रा म य म्मा य ॥ ॐ उ डी प य के ग ॥ ए हि म स्मा स र्द्ध म्मा
व ति य ति य ॥ मा स ध र्ध या व का व ल माले य न के रु नि नि व डी न के य म्मा ॥ व प के ल के

ॐ यमालं॥ वाक्कलास्यं यथा विधानेन कृत्वा निष्कर्मया च। वक्रं च त्रि। अर्थयदा साधनं॥ अग्निना
उं मं यज कानय च॥ घृता इति तिला इति दूधु किं॥ गता यथा कर्म कानय॥ आचार्यस्य श्री रुत
पशायाय॥ ईला सगम्य निवर्तय तावत्तप॥ स्नान वत्तन सिद्धय यथा यदा तपसा धूप दीप॥॥
ऊं नमः॥ अथ गन्धेति॥ उं नमः॥ उवाच॥ अथ इति दूधु॥ उं वल्लभा रुतं स॥॥ अथ इति॥
उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥
लं स्वधन दायक॥ उं अथ वा वा इत्यर्थ॥ उं अथ वा॥ उं कृमान् स्वधुनू यथा मम योत कन
गर्भे॥ दिवा॥ द्युलदं ये वयति गृह्णतु जी सजा॥ मया दत्तं सृष्टं॥ उं कन्या॥ उं कन्या॥
स्यदा॥ तस्मिन् पदं कं न दत्तं॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥
यजमानस्य॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥

मात्रा यत्कन्या गृह्यमहं संशयः॥ उं अथ गन्धेति॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥
न॥ दक्षिणा॥ वाक्कलास्यं यथा विधानेन कृत्वा निष्कर्मया च॥ वक्रं च त्रि। अर्थयदा साधनं॥ अग्निना
दूधु किन्या उं वल्लभा रुतं स॥॥ अथ इति॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥
वाक्कलास्यं यथा विधानेन कृत्वा निष्कर्मया च॥ वक्रं च त्रि। अर्थयदा साधनं॥ अग्निना
घृता॥ उं अथ मनीषा वकन्या मिमं यच्छता॥ सनाथं मां देवः॥ यता मूर्ध्नि पायत स्वाहा॥ उं नमः॥
यद्युतं न॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥
उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥ उं नमः॥

[illegible][illegible]

महामायागवियालंजयन्तुर्जिगावुडसंभादिनीत्वंनवात्मानन्दयवस्यधासंगवालवितामकुमाप्रनिगमोलि
हमीरुहिवीनयानानूनकेभूरुकेधसुपूयस।दविपवापनेद्विययात्तसुवेमिककालकापालिनीयकजनेधिक
विजमवपेपभूषययजभाहवेभूरुवधनमपेभूरुभूरुहिसूर्यभमधमोदपिय।यागविद्यागहासिहिककडी
लकापालिकेद्विवाचय्यानूरुहमीनमस्मानडांकापेसाहस्यवाकपवीषयवषट्कानहंकामरुहकानजोहिह
नगेधमकाकनात्राविलिषीमहसुकिनेधकस्सावलीजोपिलिधमाधकेभूरुकेमीरुहिमीरुलेद्विकिनेधोगिलि
धोगिनीवन्दमलापकेनडाकीजपसंयुधस।योगिनीयागसिद्धिप्रदेदविद्वपद्रपगापमेसाविनेभूरुपूधुमु
संवधसतस्यदिवाकनिकुकितासफपागालसंखवनीसिद्धिनवाहगावरुन।रुकिताय8प10द8कमककालेद्वि
लैलिकालेवकुप्यभूषयफवाबो8वि8संमनेभूमदामानव8साविरोरात्रिभूमूर्ध्वपर्वतापिसंनक्रमदविपे
नूगागान्मालाश्रीवन्दमवा नान्यनानानूगकथवध्रप्राभयूमलादावइष्टाविमूर्धकिदविल्वदीयमूर्खवध्वं
नूकानसूनाद्विद्यमानिवासकउलाद्यष्टभूरुयपिवह्नाष्टद्वधनेत्रीगवाभिमूर्जावध्रपादाभलेसुपित्वना

[illegible]

नञायाः सतिता एषा नानापाययना निनी । पूतकृपापयकानां सानार्थी कियाम्यहं ।
 चत ॥ कपिलाया चर्त शर्षं सहा ए जयवर्द्धनं । राक्षसं देवतं पूषं घृतज्ञानं कनाम्य
 ॐ ॥ दूषा डाषधी वयया रुमी दिव्या कनिहं गल । यथा वीनाय विगनं कीमत्तानं व
 धामित ॥ नर्कना ॥ नामासूनमसंस्तुतं नर्कनं गुठ्ठा इकं । कामा पशुगुया कथं ज्ञाता
 थं सुदनामित ॥ मरुत्ताना ॥ मूनाग कि निवा मां स हस्तं नित्यं समरुमं । मृद्वि सिद्धि
 कलि ॥ मू मरुतिं कर्तुं सूर्यं च वचिह उवा ॥ मू मरुतिं कर्तुं सूर्यं च वचिह उवा ॥ मू मरुतिं कर्तुं सूर्यं च वचिह उवा ॥
 दधि ॥ मरुत्ताना ॥ मूनाग कि निवा मां स हस्तं नित्यं समरुमं । मृद्वि सिद्धि

२४ पक्ष सादिमिदं सूर्यं विविक्तं गुरु (व+३) ॥ मरुत्ताना ॥ मूनाग कि निवा मां स हस्तं नित्यं समरुमं । मृद्वि सिद्धि
 सुदं मू मरुतिं कर्तुं सूर्यं च वचिह उवा ॥ मू मरुतिं कर्तुं सूर्यं च वचिह उवा ॥ मू मरुतिं कर्तुं सूर्यं च वचिह उवा ॥
 वीनजा कग विद्वं न गृहाण मम सिद्धये ॥ सिद्धये ॥ मू मरुतिं कर्तुं सूर्यं च वचिह उवा ॥ मू मरुतिं कर्तुं सूर्यं च वचिह उवा ॥
 ली ॥ गृहाण वीनवीनस्य सिद्धये नंदनं दायकं ॥ ऊरुपवीत ॥ उपवीत मिदं दंतं मन्त्र
 लक्ष्म्यलक्ष्मि ॥ गृहाण वीनयागस्य दलं शार्फं वयनमम ॥ पूष ॥ माल्या नाना विविधि
 शौ वदुं सोमं नर्कना ॥ एता पूनामर्कं वीन गृहाना न्द सिद्धये ॥ दक्षि ॥ स्वर्ण
 माल्या नाना विविधि ॥ गृहाण वीनयागस्य दलं शार्फं वयनमम ॥ पूष ॥ माल्या नाना विविधि

[illegible][illegible]

दक्षिणतः नमः मिनी ॥ नासा प्रतुस मूर्ति ॥ मध्यसूत्र पदा द्विती ॥ दक्षिणतः पत्रमानन्द
 नातु मूर्तिव्यवस्थित ॥ नादक्षिणतः मध्यसूत्र उवाचक समन्वित ॥ स्कूल २३ प्रतुस उवाच
 मध्यमपूज्य ॥ कार्यकान्तकट ॥ प्रतुस नादविगद ॥ यथा पत्रपत्र उवाच वीर्यगणध
 त्रिव ॥ सर्ववर्धनी देवी उवाच वीर्यवर्धनी ॥ जगतां वा विधीयते संपत्ती यथार्हते ॥
 गरीय मल्लाला तंसा नर्तुवतापिणी ॥ अथाव विजयं विजयनी वापन ॥ उवाच वीर्य
 मध्यसूत्र नमः मूर्तिरूपिणी ॥ वक्षसा ककरी देवी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥ उमगी गीर्ति

लूनं मंदावृद्ध समन्वित ॥ उमगी गीर्तिरूपिणी मंदावृद्ध पदा द्विती ॥ स्वकन्दरु देवी देवी का
 मन्दरु देवी ॥ पञ्चगव्य मध्यसूत्र वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी
 लिनी गीर्ति ॥ नमः वीर्यवर्धनी मंदावृद्ध नमः वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी
 नमः ॥ तमा मिदवदवन्ति ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥
 नीव वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥
 की उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥ उवाच नमः वीर्यवर्धनी ॥

[illegible]

हरे न वंशक पाली लोचन स्थिति मं हान (वैव साष्ट प ॥ तथा कालो उमा द वी
 देव इती न मां हृ ग ॥ रुड काली म हा देवी च म हृ लु रया व ह । म हा कृष्ण म हा
 नो न म हं ल कि नू यिनी ॥ नू कुं व ४ हृ कि स्त्रा हान दया नाथ क नू स्र म । त्वं देवी जन नाथ
 नं क नू स्र क नू ली म म । दया क नू स्र म स म अ कि स्त्रा न नियो जय ॥ हानार्थि ना म हा सा
 पत दि स्त्रा मि दे प्रि तुं । य स्त्रि दं य ० कि मु नं लि मं धी व मान व ४ । सा ध्या नि वि नि ना कामा
 नू मी ली ह व नि व ल्ल र ४ । सा ध्या न य नं म हानं नि शर्त यं धे न मं य दं ॥ ॥ ०० नि नि व न कि

समस्तमहामयासर्वसमाधि॥ यथा वाक्पुद्गावाग्नी॥ तैरुवतुवाग्नी॥ तयदेवविच
तानी गन्तिरुवतुवाग्नी॥ यजमानानामीष्टदेवताइजविष्णुसर्वपत्रिष्टुममु॥ ॥
ॐ ठिमावाइगे दतसाथनलमायाडी मतखगठवानेवयलेबेकावधस्यइतय
नशनादवसूकेखानतनकीसुखंरुतिमातकेसकलमनेदवडापयकेदकिण
कायकेदवयातबाह्यदयार्गशत्रवाथशरा॥ मृयोभाकिधावकाअलिगषअ
गीवीदययोकेधूनके॥ समथकायइना॥ ॐ नमोभूतदेवतापूजाविधि४ समाप्त

समस्तमहामयासर्वसमाधि॥ यथा वाक्पुद्गावाग्नी॥ तैरुवतुवाग्नी॥ तयदेवविच
तानी गन्तिरुवतुवाग्नी॥ यजमानानामीष्टदेवताइजविष्णुसर्वपत्रिष्टुममु॥ ॥
ॐ ठिमावाइगे दतसाथनलमायाडी मतखगठवानेवयलेबेकावधस्यइतय
नशनादवसूकेखानतनकीसुखंरुतिमातकेसकलमनेदवडापयकेदकिण
कायकेदवयातबाह्यदयार्गशत्रवाथशरा॥ मृयोभाकिधावकाअलिगषअ
गीवीदययोकेधूनके॥ समथकायइना॥ ॐ नमोभूतदेवतापूजाविधि४ समाप्त

माहनीया॥ कषत्रूपस्त्ररूपवर्षि लुखी भाहकायके।
युवदुर्दीललायाय माहनंरुषयाभाह॥
माहनीया॥ कालानिबमयायुषीयेववर्षिभाहिनी॥ विविष्टुष्टिगमाला गृहागवधमे

I

2758

2758

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is arranged in approximately 10 lines across the page. The script is dense and characteristic of early modern European handwriting. The parchment is aged and shows signs of wear, including discoloration and small holes.

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript page. The text is written in black ink on aged, yellowish paper. It consists of approximately 10 lines of verse or prose, with some lines starting with a small red mark (possibly a 'shloka' marker). The handwriting is somewhat stylized and shows signs of age.

[illegible]

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is written on aged, stained paper and consists of several lines of dense, flowing characters.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is written on aged, stained paper and consists of several lines of dense, flowing characters.

श्री गणेशाय नमः

वैष्णव कृतं

वाचि कृतं

रिनायक
नमः

कृतं

कृतं

श्री गणेशाय नमः

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कृतं

कृतं

कृतं

वायुवं गज

गङ्गानि वरुणा

सिद्धि

कृष्ण

०००५



यस्मिन्गवश्चास

नवतमि

दशम

अष्टम

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

एध लेख १ वा क
नान ह धास्य के
२॥ गनाम पि
पम इम इ ॥
प्र खाने यता
इा इ का इ ना इ

वा रु नः ३ व स
ना भु ड व नि दे ॥
ना य सु ॥ न न रा
व ॥ रु न म का ॥
ना हा न पु नि सु म
स के मा ना रु ना

२॥ ख न म ॥ रु ल न का ल मि त्या रु ४ क ॥ न प न म
र व ॥ व क हा नि रु ७ धा न ॥ रु न ना ठ रु या
दि ती ॥ अ सा इ म्य रु न य नु म रु सि धि न जा य
त ॥ अ व र्ण वी त मा न न रु न ना वी त वा रु क ॥

॥ यत्कुरु स भस्म इदं
नेमं दीया विधि इना
अहो नो कुरु गोवि
दं नदी कुरु याद
अस न मे इग न कि
॥ यस्मिन्ने किमने
ने ॥ न को कुरिया
॥ कुर्यात्कुरु यिने
नो इवानु कुरिय

॥ सप्त १४३

॥ १४३ ॥
॥ १४३ ॥
॥ १४३ ॥
॥ १४३ ॥
॥ १४३ ॥
॥ १४३ ॥
॥ १४३ ॥
॥ १४३ ॥
॥ १४३ ॥
॥ १४३ ॥

॥ के मा नो कुरुया
॥ दिन कुरुया कुरु
॥ न अने ॥ यस्मि
॥ न किने ॥
॥ न्यादिकुरु कुरु
॥ याद गन किने
॥ यादिने ॥
॥ कायु १० ॥

राजिवंशमतिक्रम्य

नागधारा ॥ १ ॥

शीतल अंशु रीतिरा ॥ २ ॥

आनावपान ॥ ३ ॥

रुनिनि ॥ ४ ॥

देवता नटा होवने ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

अधिक लेखना ॥ ७ ॥

होमपान ॥ ८ ॥

यिगानखमीरा ॥ ९ ॥

॥ १० ॥

होदायिगान ॥ ११ ॥

अनिख ॥ १२ ॥

॥ १३ ॥

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

॥ १७ ॥

कर्मका ॥ १ ॥

रिगनिर्देश ॥ २ ॥

॥ ३ ॥

॥ ४ ॥

॥ ५ ॥

॥ ६ ॥

॥ ७ ॥

॥ ८ ॥

॥ ९ ॥

॥ १० ॥

॥ ११ ॥

॥ १२ ॥

॥ १३ ॥

॥ १४ ॥

॥ १५ ॥

॥ १६ ॥

॥ १७ ॥

॥ १८ ॥

